शिवनगरी की औपन्यासिक गाथा

पौराणिक काल से ही शिव नगरी के रूप में विख्यात काशी को मोक्षदायिनी माना जाता रहा है। ऐसी मान्यता है कि इस नगरी में प्राण त्यागने वाले को मुक्ति मिल जाती है। इसी मान्यता और पृष्ठभूमि पर अपनी तरह का पहला उपन्यास 'काशी मरणान्मुक्ति' दो वर्ष पूर्व प्रकाशित होकर आया था। हाल में ही इसका तीसरा संस्करण छपकर आया है। यह कृति परंपरागत उपन्यास के फॉर्मेट में फिट नहीं होती है। बावजूद इसके, अपने गहन आध्यात्मिक और दार्शनिक तत्व के कारण यह कृति आकृष्ट करती है। राघव और यशोदा नामक दंपती को अठारह वर्ष संतानविहीन रहने के बाद (गंगा नदी के किनारे काशी में स्थित) मणिकर्णिका घाट पर अनाथ बालक 'महा' मिलता है, जो वास्तव में शिवांश होता है। इसी के मनुष्य रूप में चैतन्य होने और फिर पूर्णतः शिव में लीन होने की कथा को उपन्यास में विस्तार से लिपिबद्ध किया गया है। कह सकते हैं इसमें कर्म से एक चांडाल पुरुष को महामानव के उच्चतम पद पर प्रतिष्ठित होने की कथा को अनोखे ढंग से वर्णित किया गया है। कई स्थलों पर यह प्रमाणित होता है कि उपन्यास के लेखकद्वय मनोज ठक्कर और रश्मि छाजेड़ ने इसे लिखने में केवल शब्द साधना ही नहीं, आंतरिक गहन आध्यात्मिक यात्रा भी की है। काशी के बारे में इसमें ऐसी अनेक धारणाएं और मान्यताएं पुराणों से उद्धृत की गई हैं, जो इस पुरानगरी के महात्म्य को सिद्ध करती हैं। उपन्यास की शैली भी लेखकीय के बजाय वाचक की अधिक लगती है, जैसे उपन्यास का समस्त घटनाक्रम लेखकों की आंखों के समक्ष घटित हुआ हो। यह कृति पाठक को आध्यात्मिक ग्रंथ की अनुभूति कराती है।

पुस्तक : काशी मरणान्मुक्ति
लेखक : मनोज ठक्कर, रश्मि छाजेड़
मूल्य : 360 रुपए
प्रकाशक : शिव ओम साईं प्रकाशन, इंदौर